शालोम! परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने में आपका स्वागत है।

शास्त्र कहता है:

“यहोवा का भय ज्ञान की शुरुआत है…” (नीतिवचन 1:7)

हमारे प्रभु यीशु मसीह के शब्द बहुत मूल्यवान हैं, जितना हम अक्सर समझते हैं उससे कहीं अधिक। जब हम परमेश्वर का भय रखते हुए बढ़ते हैं, हमारा ज्ञान दिन-प्रतिदिन बढ़ता है, जब तक कि हम उस पूर्ण समझ तक नहीं पहुँच जाते, जिसे परमेश्वर हमारे लिए चाहता है – “पूर्ण पुरुष की परिपक्वता, मसीह की पूर्ण माप के अनुसार” (इफिसियों 4:13)।

एक गलत समझी गई अधिकारिता
एक दिन मैंने दो महिलाओं के बीच बातचीत सुनी। एक ने आत्मविश्वास से कहा:
“हमें साँपों और बिच्छुओं पर कदम रखने की शक्ति दी गई है!”

उसने आगे कहा:
“तो जब आपका शत्रु आपके सामने खड़ा हो, तो इंतजार मत करो – तुरंत उसे कुचल दो! उसे नष्ट कर दो, क्योंकि हमारे पास यह अधिकार है!”

ये शब्द मुझे बहुत दुखी कर गए।

प्रियजन, सच्चाई यह है कि नए करार में हमारा शत्रु इंसानी नहीं है।
हम मनुष्यों से नहीं लड़ते। हमारा असली शत्रु शैतान और उसके आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं।

“क्योंकि हमारा संघर्ष मांस और खून के खिलाफ नहीं है, बल्कि राजा और शक्तियों, इस अंधकार की दुनिया के अधिपतियों और
आकाश में बुराई की आध्यात्मिक शक्तियों के खिलाफ है।” (इफिसियों 6:12)

पुराना बनाम नया: बदलाव को समझना
पुराने करार में हम देखते हैं कि कैसे दाऊद, सोलोमन, शाऊल और अन्य लोग वास्तविक मानव शत्रुओं से लड़ते थे। क्यों? क्योंकि उन्होंने यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर की शाश्वत योजना का पूर्ण रहस्य अभी तक नहीं प्राप्त किया था। परमेश्वर ने अपनी दया में उन्हें मानव स्तर पर शत्रुओं का सामना करने की अनुमति दी – लेकिन यह कभी उसका मूल उद्देश्य नहीं था।

यीशु ने कहा:

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

“तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण मूसा ने तुम्हें अपनी पत्नियों को छोड़ने की अनुमति दी; परंतु आरंभ से ऐसा नहीं
था।” (मत्ती 19:8)

जैसे परमेश्वर ने पुराने करार में बहुपतित्व और तलाक की अनुमति दी, उसी तरह उसने भौतिक युद्धों की भी अनुमति दी। लेकिन मसीह में, जो वचन मांस बनकर आया (यूहन्ना 1:14), परमेश्वर की पूर्ण इच्छा प्रकट होती है।

यीशु ने क्या सिखाया?
यीशु ने नए तरीके से यह बताया कि हमें अपने “शत्रुओं” के साथ कैसे पेश आना चाहिए। बदला लेने के बजाय, उन्होंने प्रेम सिखाया:

“मैं तुमसे कहता हूँ, अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो
तुम्हें सताते हैं उनके लिए प्रार्थना करो।” (मत्ती 5:44)

“जो तुम्हें अभिशप्त करते हैं उन्हें आशीर्वाद दो, और जो तुम्हारे साथ बुरा करते हैं उनके लिए प्रार्थना करो।” (लूका 6:28)

उन्होंने आगे कहा:

“तुमने सुना कि कहा गया, आँख के बदले आँख, दांत के बदले दांत। मैं तुमसे कहता हूँ, बुराई का प्रतिकार मत करो। यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर प्रहार करे, तो उसे दूसरा भी दो।” (मत्ती 5:38-39)

ये शिक्षाएँ उस समय के लिए क्रांतिकारी थीं। परन्तु यीशु ने जोर दिया:
“आरंभ से ऐसा नहीं था।”

असली शत्रु को पहचानना
यदि कोई आपको नफ़रत करता है, अपमान करता है या सक्रिय रूप से आपके खिलाफ है, तो समझें: वह आपका वास्तविक शत्रु नहीं है। वह एक उपकरण है, जिसे शैतान ने जानबूझकर या अनजाने में इस्तेमाल किया है।

हमारे शत्रुओं के खिलाफ संघर्ष – एक बाइबिल समझ

“होशियार और सतर्क रहो; तुम्हारा विरोधी, शैतान, शेर की
भांति दहाड़ता हुआ घूमता है और किसी को निगलने की तलाश करता है।” (1 पेत्रुस 5:8)

“हमारे भाइयों का अभियोजक… जो उन्हें हमारे परमेश्वर के
सामने दिन-रात आरोपित करता है…” (प्रकाशितवाक्य 12:10)

इसलिए व्यक्ति से मत लड़ो, बल्कि उस आत्मा से लड़ो जो उसे प्रभावित कर रहा है।

“परमेश्वर का पूरा शस्त्र धारण करो, ताकि तुम शैतान की चाल के विरुद्ध टिक सको।” (इफिसियों 6:11)

आध्यात्मिक संघर्ष के छह अस्त्र
पौलुस ने छह आध्यात्मिक अस्त्र बताए हैं, जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं, ताकि हम सच्ची लड़ाई जीत सकें – मानवों के खिलाफ नहीं, बल्कि शैतान और उसकी शक्तियों के खिलाफ (इफिसियों 6:13-17):

सत्य की बेल्ट – शास्त्र की सच्चाई जानो। मसीह को जानो, जो स्वयं सत्य हैं (यूहन्ना 14:6)।

धर्म की छाती का कवच – तुम्हारी धर्मशीलता विश्वास के माध्यम से है, कर्म से नहीं। यह शत्रु के आरोपों से तुम्हारे हृदय की रक्षा करता है (रोमियों 3:22)।

शांति के सुसमाचार के जूते – प्रेम के शब्दों और कर्मों से सुसमाचार प्रचार करो। अपने शत्रुओं के प्रति दयालु बनो, उन्हें आशीर्वाद दो और शत्रु को कमजोर करो।

विश्वास की ढाल – विश्वास रखो कि कोई भी हमला सफल नहीं होगा। परमेश्वर के बच्चे के रूप में दृढ़ रहो (यशायाह 54:17)।

उद्धार का हेलमेट – तुम्हारी आत्मा उद्धार की आशा में सुरक्षित रहती है। तुम्हें बड़ी पाप से मुक्ति मिली है, दूसरों को भी क्षमा करो (इफिसियों 4:30)।

आत्मा का तलवार – परमेश्वर का वचन – शास्त्र को गहराई से जानो। जब शैतान ने यीशु को परीक्षा दी, तो उन्होंने जवाब दिया: “लिखा है…” (मत्ती 4)।
“परमेश्वर का वचन जीवित और शक्तिशाली है… यह हृदय के विचार और इरादों तक को भेदता है।” (इब्रानियों 4:12)

अधिकारिता का दुरुपयोग: एक खतरनाक जाल
कई विश्वासी गलतफहमी में रहते हैं कि उन्हें अपने शत्रुओं की मृत्यु की कामना करनी चाहिए, उनके नाम कागज पर लिखने चाहिए या आध्यात्मिक युद्ध के नाम पर शाप देना चाहिए।

यह बाइबिल के अनुसार नहीं है – यह शैतानी शिक्षाएँ हैं (1 तीमुथियुस 4:1)। हमारे “साँप और बिच्छु” इंसान नहीं, बल्कि दैवीय शक्तियाँ हैं।

“देखो, मैंने तुम्हें शक्ति दी है कि तुम साँपों और
बिच्छुओं पर कदम रखो और शत्रु की सारी शक्ति पर अधिकार रखो;…” (लूका 10:19)

लेकिन यह अधिकार इंसानों को मारने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें दैवी बंधन से मुक्त करने के लिए है।

आज से क्या करें?
अपने शत्रुओं की मृत्यु के लिए प्रार्थना करना बंद करें।

उनके उद्धार और स्वतंत्रता के लिए प्रार्थना करें।

मांस के उपकरणों के बजाय आत्मा के छह अस्त्रों का उपयोग करें।

ऐसे शिक्षक या प्रवक्ताओं को अस्वीकार करें, जो नफरत, शाप या नुकसान का प्रचार करते हैं। वे मसीह का प्रचार नहीं करते।

“जो तुम्हें सताते हैं उन्हें आशीर्वाद दो; आशीर्वाद दो और शाप मत दो।” (रोमियों 12:14)

आपका शत्रु कौन है? शैतान।
आप उसे कैसे हरा सकते हैं? आध्यात्मिक अस्त्रों से, मांसल नहीं।
आपका मिशन क्या है? आत्माएँ बचाना, न कि नष्ट करना।
यीशु क्या करते? वे बचाते, शाप नहीं देते।

परमेश्वर आपको कृपा दें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर आपको इस सत्य के लिए आँखें खोलें और और भी अधिक दिखाएँ।

हमारे शत्रुओं के खिलाफ संघर्ष – एक बाइबिल समझ

आइए हम बुराई पर भलाई के द्वारा विजय पाएं (रोमियों 12:21) और यीशु के सच्चे शिष्य बनकर चलें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp